"रामचरित मानस में चरित्र सौन्दर्य के सृजनात्मक रूप"

डॉ0 बन्दना निगम

रामचरित मानस भारत का गौरव ग्रन्थ है इस ग्रन्थ की अपनी अद्वितीय विशेषताएँ है। इसमें लोक मर्यादाओं के आदर्शोन्मुख किया गया भारतीय संस्कृति को वाणी प्रदान की। इस महाकाव्य में भारतीय जीवन दर्शन और संस्कृति को रामकथा के माध्यम से अभिव्यक्ति किया गया है। महाकवि तुलसीदास जी का यह संभवतः मौलिक प्रयास है। तुलसी मानस कवि के साथ ही एक विचारक, दार्शनिक, धर्म व समाज सुधारक के रूप में भी प्रकट हुए। किसी भी युग के प्रतिनिधि कवि विचारक दार्शनिक समाज सुधारक का महत्व दो दृष्टिकोण से आका जाता है। एक तो अपनी कृतियों से जहाँ वे अपनी विचारधारा में देश काल की परिस्थितियों से बधें व सापेक्षवादी रहें है और दूसरे जहाँ वे देशकाल की स्थितियों को लांघ कर स्थाई मूल्यों के संस्थापक के रूप में सामने आये है।

तुलसी का मानस मुसलमानों शासकों के समय की कृति है वह युग एक ओर तो हिन्दू जाति की घोर निराशा का युग था। दूसरी ओर उत्तर मध्यकाल में मुस्लिम राजवंशों की स्थापना हो चुकी थी। यह काल दो समाज दो संस्कृतियों का संधिकाल था। एक तरफ विलास वैभव था, तो दूसरी तरफ अन्याय व अत्याचार में पिस रही जनता थी सब स्थितियों का तीखा अनुभव होना तुलसी को स्वाभाविक था। जिस काल में मानस की रचना की गई वह अव्यवस्था का काल था। तुलसी काव्य शास्त्र के महान पण्डित थे। उनकी काव्य प्रतिभा अद्वभुत थी। अपने युग की तमाम विसंगतियों से प्रभावित होना भी उनके जैसे महान तत्व चिंतक के लिए स्वाभाविक था। अतः वे देख रहे थे कि वर्तमान लोग और समाज विखण्डित हो चुका हैं वर्णाश्रम की व्यवस्था तार तार हो चुकी है समाज में नीतियाँ एवं मर्यादाएं विलुप्त हो गई है, हिन्दू और हिन्दुत्व भावना से लोगों का विश्वास टूट चुका है।

पाखण्ड एवं चमत्कार का बोल बाला है। ऐसे में लोगों की आस्थाएं टूट चुकी है। लोगों का न धर्म में विश्वास रह गया है न शास्त्र में न नीति में न मर्यादा में। ऐसी परिस्थिति में गोस्वामी जी ने देखा कि हिन्दू धर्म समाज एवं देश की रक्षा के लिए मानस ग्रन्थ में भगवान श्री राम का अवतरण ही उचित समझा जिसमें वे सभी गुण विद्यमान थे जो कि विषम परिस्थितियों से उबार सकें। तुलसी के राम के चरित्र में एक ओर शक्ति शील, और सौन्दर्य है तो दूसरी ओर नीतिधर्म और मर्यादा का अक्षय भण्डार है तो तीसरी ओर ईश्वर ब्रह्मत्व है। उनका चरित्र इतना व्यापक और उदात्त है कि सहज ही श्रद्धा और विश्वास के साथ उन्हें स्वीकार कर लेते है। जिसमें दुष्ट दलन की अपार शक्तियाँ और साहस है इन्ही सब भावनाओं से प्रेरित होकर राम के चरित्र को लेकर उन्होंने रामचरित–मानस की संरचना की है। तुलसी का रामचरित मानस मात्र एक महाकाव्य नही वरन एक महानायक का ग्रन्थ रूप में अवतार है। रामचरित–मानस में सभी पात्रों का सुन्दर चरित्र उद्घाटन करने में समर्थ सिद्ध हो सके है – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है –

"पूर्ण भावुक वे ही है जो जीवन के प्रत्येक मर्म स्पर्शीय अंश का साक्षात्कार कर सकें और उसे श्रोता या पाठक के सन्मुख अपने अपने शब्द शक्ति के द्वारा प्रत्यक्ष कर सकें।"

रामचरित–मानस में तुलसीदास जी विविध प्रसंगों के माध्यम से जो चरित्र का सृजन करते है जिस शक्ति, शील का निरूपण करते है जिस समाज परिवार एवं राज्य का निर्माण करते है। जिस नीति धर्म एवं मर्यादा का उद्घोष करते है, वह भारतीय जन मानस की आचार संहिता बनकर आज 500 वर्षो के बाद भी व्याप्त है। मानस का यही असली चरित्र विधान है। चरित्र विधान की दृष्टि से यदि तुलना की जाय तो विश्व बाडगंमय में रामचरित मानस के समक्ष कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं है।

गोस्वामी तुलसीदास राम के स्वरूप में अनन्त सौन्दर्य, अनन्त शक्ति, और अनन्त शील की प्रतिष्ठा करके भक्ति के क्षेत्र से मानव हृदय के परिष्कार एवं प्रसार के लिए विस्तृत क्षेत्र उपलब्ध कर देते है। तुलसी बार–बार यही कहते है कि नर शरीर की सार्थकता भगवत्प्राप्ति है और उसका एक मात्र साधन परोपकार है। दैन्य प्रदर्शन करते हुए तुलसी थकते नही है। परन्तु वहाँ भी वह लोकहित को भूलते नहीं है यही कारण है कि उनकी वेदना और पीड़ा शक्ति की सीमाओं का उल्लंघन करके विश्व की वेदना और पीड़ा बन जाती है –

''सुन मन मूढ़ सिखावन मेरो
हरिपद – विमुख लियो न काहू सुख, सठ। यह समुझि सबेरो (2)

मनुष्य के व्यक्तित्व में आचरण का वही पक्ष जो लोक–कन्याण को प्रभावित करता है, चरित्र कहलाता है। चरित्र का अभिप्राय व्यक्ति के आचरण से है जिसमें वह चलता है। किसी भी व्यक्ति का चरित्र ही उसे देवता, दानव और मानव बनाने में उत्तरदायी होता है। चारित्रिक उदारता से व्यक्ति मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम के समाज समपूज्य बन जाता है। चरित्रिक पतन के कारण व्यक्ति राक्षस राजा–रावण की तरह एक विनाशकारी असमाजिक तत्व बनकर रह जाता है। तुलसी साहित्य में मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम के चारित्रिक उदात्तता का दर्शन सर्वत्र परिलक्षित होता है। श्रीराम की सहजता, सुशीलता, विनम्रता, उदारता सत्यनिष्ठता, धैर्य, पराक्रम न्याय–प्रियता त्याग तपस्या, एश्वर्य दीन, वत्सलता आदि देव दुलर्भ गुण उनके चरित्र सुन्दर की सुन्दर सामग्री है।

''सुन सीतापति सील सुभाउ
मोद न मन तन पुलक, नयन जल सोनर खेहर खाउ'' (3)

रामचरित–मानस में रामकथा के माध्यम से तुलसीदास जी पात्रों का चयन किसी न किसी उद्देश्य को लेकर किये है। उन्होंने भगवान राम का जन्म असुरों का संहार अधर्म, अधर्मियों के नाश, धर्म संस्थापन तथा भक्तों को लीला का आनन्द देने के लिए राम अवतार का अवतरण करते है। राक्षसों का वध शरणागतों की रक्षा, रामराज्य की स्थापना एवं ऋषि मुनियों आदि को अनुगृहित करके वे कार्यो का संपादन करते है। भगवान राम शक्ति, शील व सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है। धर्म स्थापना लोक रक्षक और लोक रंजन के लिए भगवान राम अवतरित होते है। गोस्वामी जी अपनी लेखनी से भगवान राम के चरित्र को राजा के बेटे या ईश्वर के रूप में नहीं बल्कि सामान्य आदमी की तरह सबसे मिलते जुलते दिखाया गया है मानस में जहाँ एक ओर राम को राजा के रूप में दिखाया जो नैतिक, शक्ति धर्म पथगामी, कर्तव्य निष्ठ, वैराग्य भाव वाले राजा थे। राम का चरित्र व्यक्ति परिवार राष्ट्र और सम्पूर्ण मानव समाज का एक पूर्ण जीवन दर्शन हैं बालक राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का आपस में बहुत प्रेम है वे प्रातः काल उठकर

माता–पिता एवं गुरूजनों को प्रणाम करते है और साथ मिलकर भोजन करते है – चारो भाइयों का चारित्रिक सौन्दर्य देखिए –

''अनुज सखा संग भोजन करहीं। मातु–पिता आज्ञा अनुसरहीं।।
वेद पुराण सुनहिं मन लाई। आपु कहहि अनुजन्ह समुझाई।।
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु–पिता गुरू नामहि माथा।।
आयसु मॉग करहिं पुर काजा। देखि चरिन हरषइ मन राजा।। (4)

इस प्रकार रामचरित – मानस की रचना करके एक ऐसी सुन्दर चरित्र की कल्पना किये हैं जो सामान्य जन का कल्याण करने वाला हो राम, भरत, लक्ष्मण इत्यादि के अपने आचरण द्वारा समाज के सम्मुख जो आदर्श रूप रखा है वह प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आचरित होने पर उसे दिव्य रूप दे सकता है। राम का चरित्र मर्यादा पुरूषोत्तम राम का परिवार है। पति–पत्नी का आदर्श चरित्र माता–पिता का चरित्र, पिता–पुत्र के आदर्श चरित्र, भाई–भाई का आदर्श गुरूभक्ति का आदर्श अपने उत्कृष्ट चरित्र में समायोजित है। भरत के आदर्श चरित्र की व्याख्या करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है –

''वह धर्म के पथगामी है उनका दिव्य चरित्र निष्कलंक है। उनमें धर्मशीलता, लोक भीरूरता, स्नेह और भक्ति का समन्वय निःस्वार्थ मातृ प्रेम और कर्तव्य परायणता की महिमा अद्वितीय है।''(5)

लक्ष्मण का चरित्र राम के समान व्यापक है वे छाया की भॉति राम के साथ रहते है वे उदृत, निर्भयी, साहसी, स्पष्ट वक्ता, दृढ़, कर्मठ और रामभक्त है। लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के चरित्र का सृजन करके गोस्वामी जी समाज को एक प्रकार से शिक्षा देते है कि परिवार का कुटुम्ब में किस प्रकार से एकता स्थापित हो सकती है इसी एकता को स्थापित करने के लिए गुणों का निर्माण करते है। हनुमान एक चरित्रवान पराक्रमी, बुद्धिमानी, सहृदय, कर्तव्यनिष्ठ, स्वामिभक्त और रामभक्त का आदर्श है। विभीषण धार्मिक, भातुद्रोही और रामभक्त है ; बालि का चरित्र ऊँचा है। इसके अतिरिक्त वशिष्ठ, विश्वामित्र, जनक, सपन्त्र गुह, केवट, बाल्मीकि, अंगन, सुग्रीव, मेघनाद, मारीच आदि पात्रों को चरित्र चित्रण देशकाल स्वभाव के अनुरूप किया है।

भरत का चरित्र सौन्दर्य दृष्टव्य है –

''मोहि राजू जब देहहँहु जबही। रसा रसातल जाइहिं तबहीं।।
मो समान को पापू निवासु। जेहि लगि सियराम वनवासू।।
राम–राम कह कॉननू दीन्हा। विछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा।।
मै सठ सब अनरथ कर हेतु। बैठ बात सब सुनहुँ सचेतू। (6)

सम्पूर्ण जगत में भरत जैसा भ्रात प्रेम त्यागी तथा धर्मशील प्राणी तो अन्यत्र मिलेगा नहीं, जो भ्रातृ स्नेह में भक्ति में इतना बड़ा त्याग कर सका हो स्वयं अपनी ही माता को कटु वचन कहकर धिक्कार सका हो। चित्रकूट में उनकी धर्मबुद्धि तथा महिमा की थाह स्वयं उनके गुरू वशिष्ट भी नहीं पा सकें –

''भरत महा महिमा जल रासी। मुनिमति तीर ठाढ़ि अबला सी।।
गा चह पार जतनु हिय हेरा। पावति नाव न बोहति बेरा।।
और करहिं की भरत बड़ाई। सरसी सीप कि सिन्धु समाई।।

लक्ष्मण, भरत एवं हनुमान ऐसे ही सेवक है। राम के सबसे बड़े सेवक हनुमान सदैव अपने स्वामी की सेवा में प्रस्तुत रहते है। लक्ष्मण भी अपने भाई के सेवा का व्रत लिये है राम के द्वारा बार–बार शयन करने के लिए कहने पर भी चरणों को दबाने में लीन है –

''चापत चरन लखनु उर लाएँ। सभय सप्रेम परम सचु पाएँ।
पुनि–पुनि प्रभु कह सोवहु ताता। पौढ़े धरि उर पद जल जाता।।

नारी पात्रों का चारित्रिक सौन्दर्य में तुलसीदास जी कि सर्वाधिक आदर्श चरित्र जगत जननी भगवती सीता के जीवन दर्शन में निहित है। सीता उत्तम कोटि की पतिव्रता, आदर्श धर्मपत्नी, आदर्श राज महिषी, आदर्श कुलवधु और आदर्श माँ के रूप में प्रस्तुत होती है। सीता सौन्दर्य की सीमा है। भारतीय नारी के लोक मर्यादा की प्रतिमूर्ति थी। एक धर्म एक नियम की स्थापना की गई –

''एकै धर्म एक व्रत नेमा, काम वचन मन पति पद प्रेमा।।

कौशल्या का चरित्र सर्वोत्कृष्ट है। कैकयी द्वारा वनवास दिये जाने पर कौशल्या कोई विरोध नहीं करती। इसी प्रकार सुनैयना अपनी पुत्री सीता को पति सेवा का उपदेश देती है –

''सास ससुर गुरू सेवा करहु। पति रूख लखि आयसु अनु सरेहु।''

रामचरित मानस में श्रृंगार का अत्यन्त सुन्दर स्वरूप प्रस्तुत हुआ है जिसमें भारतीय संस्कृति की मर्यादावादी दृष्टिकोण का निर्वहन है। जनक वाटिका में राम–सीता के प्रथम दर्शन से उत्पन्न पूर्व राग का सर्वश्रेष्ठ निरूपण हुआ है। सीता–राम के मिलन में प्रणय संकल्प का सुन्दर सुमधुर चित्रण इन पंक्तियों के माध्यम से देखा जा सकता है –

''थके नयन रघुपति छबि देखे, पलकन हूँ परि हरिय निभेषी।
भयउ विलोचन चारू अंचचल मनहु सकुचि निमि तजेउ दिंगचल।।

तुलसीदास जी के काव्य में सर्वत्र भक्ति भाव की प्रधानता है उन्होंने काव्य के लिए काव्य रचना नहीं की कविता करना उनका उद्देश्य नहीं था अपितु भक्ति के प्रसार के लिए भक्ति के संदेश को जन–जन तक पहुँचाने के लिए काव्य रचना भक्ति को आधार बना दिया हैं रामकथा के माध्यम से यह सन्देश दिया है कि असत्य पर सत्य की विजय अन्याय पर न्याय की अज्ञान पर ज्ञान की ओर विजय दिखाई है। अन्ततः राम लंका का राज विभीषण को सौंपकर वन्दिनी सीता को साथ लेकर अनुज लक्ष्मण सहित वापस अयोध्या आ जाते है। गोस्वामी जी कम अक्षरों में अधिक से अधिक भाव समेटकर तथा छहो शास्त्र का रस लेकर रामचरित मानस में पात्रों के चरित्र को समेटा है। गोस्वामी जी चरित्रो के माध्यम से सौन्दर्य चित्र की अच्छी प्रस्तुति देते है। सच्चे चरित्र वे ही हो सकते है जो अन्तर निहित सौन्दर्य को झलका सकें, प्रकाश ला सकें कुछ सूक्ष्म, अव्यक्त है, अप्रकट है उसे व्यक्त करने की क्षमता चरित्रों में ही होती है। गोस्वामी जी ऐसे ही ढ़ेर सारे अव्यक्त कथनों को अमूर्त भावों को अप्रकट अनुभूतियों को प्रकट करने के लिए चरित्रों का आश्रय लिया है। अतः हम चरित्र सौन्दर्य को देखकर हम निःसन्देह रूप से कह सकते है कि तुलसी के काव्य में चरित्र सौन्दर्य सर्वथा सफल और जीवन्त है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

(1)	त्रिवेणी	:	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	–	125 पेज
(2)	रामचरित मानस	:	तुलसीदास	–	2 / 161 / 6
(3)	रामचरित मानस	:	तुलसीदास	–	2 / 253 / 5
(4)	रामचरित मानस	:	तुलसीदास	–	1 / 205 / 2,3,4
(5)	तुलसीदास	:	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	–	126 पेज
(6)	रामचरित मानस	:	तुलसीदास	–	2 / 179 / 2,3
(7)	रामचरित मानस	:	तुलसीदास	–	1 / 226 / 8,1
(8)	रामचरित मानस	:	तुलसीदास	–	1 / 232 / 5,6

ग्रन्थ सूची

(1) महाकवि तुलसीदास युग संदर्भ : डॉ. भगीरथ मिश्र